❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

मार्गशीर्ष मास, विक्रम संवत् – २०७०

वर्ष : ५ | अंक ५६ | दिसम्बर २०१३ | मूल्य : ५.०० रुपये

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

संरक्षक - संस्थापक
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

❖

मुख्य सम्पादक
डॉ. धनञ्जय आर्य (अवैतनिक)

❖

सम्पादक
चन्द्रभूषण आर्य
रवीन्द्र आर्य

❖

कार्यकारी सम्पादक
ब्र. शिवदेव आर्य

❖

व्यवस्थापक
ब्र. अनुदीप आर्य
ब्र. कैलाश आर्य

❖

कार्यालय
श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल
दून वाटिका-२, पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड)
दूरभाष - ०१३५-२१०२४५१
जंगमवाणी - ०९४१११०६१०४
ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in
website: www.pranawanand.org

❖

सदस्यता शुल्क
आजीवन - १०००.०० रुपये
वार्षिक - ५०.०० रुपये
एक प्रति - ५ रुपये

विषय-क्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सम्पादकीय	२
भजन	५
महर्षि दयानन्द की जरूरत क्यों ?	६
आधुनिक भारत (कविता)	९
राजवृक्षः (आरग्वधः)	१०
बढ़ते मानव कदम.........	११
अथ श्री ओमानन्द लहरी	१४
समाचार दर्पण	१९
संस्कृत-शिक्षणम्	२०

नीमीतीरे सततसुखदे सर्वतो दर्शनीयम्,
पौन्धाग्रामे नगरनिनदाद् दूरमीक्ष्यं मनुष्यैः।
हैमे तुङ्गे शिखरिशिखरे शोभनोपत्यकायाम्,
आर्षज्योतिर्मठगुरुकुलं राजते संसृतौ मे।।

रवीन्द्रकुमारः

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

सम्पादक की कलम से...

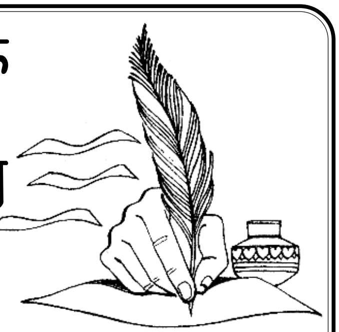

कौन नहीं चाहेगा श्रद्धास्पद स्वामी श्रद्धानन्द को जानना?

संसार में व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों के द्वारा ही हुआ करती है। जिस-जिस ने समाज के लिए धर्मयुक्त कार्य किये, उसे सभ्य समाज सदैव स्मरण करता है। कल्याण मार्ग के पथिक मुंशीराम से महात्मा मुंशीराम व महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बने इस महापुरोधा का मर्मस्पर्शी जीवन जानकर प्रत्येक मानव का पाषाण से पाषाण हृदय भी अश्रुधारा से पिघल जाता है। कौन नहीं जानना चाहता ऐसे व्यक्ति के बारे में जिसके जीवन में घोर तमस का डेरा हो और वह अपने जीवन को ज्ञान के प्रकाश की आभा से आप्लावित कर ज्ञानालोक से सब जगत् को प्रकाशित करता हो।

मुंशीराम का जन्म जालन्धर जनपद में पिता नानकचन्द के यहाँ १८५६ में हुआ। बाल्यकाल से ही सबसे छोटे हाने के कारण ज्यादा दुलार व प्यार ने स्वच्छन्दता प्रदान की और वह स्वच्छन्दता ही जीवन को अवनत कराने में प्रथम कारण बनी। क्योंकि हम सब जानते हैं कि-

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः।।

(महा.भाष्य. अ. ८./पा.१/सू.८/आ.१)

अर्थात् जो माता-पिता अपने बालकों को जितना अधिक लाड-प्यार, दुलार करते हैं, वे बालकों को उतने ही अधिक बिगडाते हैं तथा जिन बालकों के माता-पिता अपने बालकों के साथ सतर्कता पूर्वक व्यवहार करते है, उनके बालक गुणवान् बन औरों को भी अपने प्रकाश से प्रकाशित करते हैं।

मुंशीराम को नास्तिकता ने तब आकर घेरा जब मुंशीराम ने पूजार्चनार्थ सर्वप्रथम '**रीवा की महारानी**' के मन्दिर में प्रवेश किया। मन्दिर में क्रियमाण क्रियाकलापों को देख भक्तिपूर्ण हृदय को आघात हुआ कि भगवान् के दरबार में भेदभाव भी होता है, यह देख मुंशीराम नास्तिक बन घर लौटें। इसके बाद मांस और शराब के दोष में लिप्त हो गये व साथियों के उकसाने पर वेश्यालयों में भी गमनागमन प्रारम्भ कर दिया। इन सब कुकृत्यों में लिप्त होने से कॉलेज की पढ़ाई में अनुत्तीर्ण हो गये और निरन्तर अवनति को प्राप्त होते गये।

पिता जी के स्थानान्तरण के पश्चात् काशी से बरेली आ गये। १८७१ में महर्षि दयानन्द बरेली में आये, स्वामी जी की सभा की व्यवस्था का समस्त कार्यभार मुंशीराम के पिता श्री नानकचन्द्र जी को सौंपा गया था। पहले दिन के प्रवचन को सुनकर मुंशीराम के पिता जी बहुत प्रभावित हुए । पिता ने अपने पुत्र को स्वामी जी के प्रवचन सुनने के लिए तैयार किया। स्वामी जी संस्कृत के ज्ञाता है, यह जानकर उनके मन में निराशा हुई पर पिता का आदेश कैसे टाला जाये? अतः पिताजी की आज्ञा को शिरोधार्य कर प्रवचन सुनने गये। वहाँ जाकर आदित्य मूर्ति को देखकर कुछ श्रद्धा उत्पन्न हुई। सभा में उपस्थित पादरी टी.जे.स्काट और अन्य यूरोपियनों को उत्सुकता से बैठे देखा तो श्रद्धा और अधिक दृढ़ हो गई। अभी प्रवचन १० मिनट का भी नहीं हुआ कि मुंशीराम ने विचारा कि यह विचित्र मानव है जो केवल संस्कृतज्ञ होते हुए युक्तियुक्त बातें करता है। यह विद्वान् ही नहीं, साक्षात् ईश्वर का प्रतिरूप है। न ही ऐसा कभी देखा था और न ही सुना था। नास्तिक होते हुए भी आत्मिक आनन्द में निमग्न कर देना ऋषि की विद्वतापूर्ण प्रेरणा का ही काम था।

उपदेश सुनकर आत्मिक शान्ति तो अनुभव हुई पुनः स्वामी जी से शंका-समाधान किया और अन्त में कहा-स्वामी जी! मैं आपकी सारी बात मानता हूँ किन्तु अभी भी मुझे ईश्वर के प्रति विश्वास नहीं है। स्वामी जी ने कहा-केवल तर्क से ही आत्मज्ञान नहीं होता। यह तो प्रभु-कृपा से होता है। इस घटना से नास्तिकता की रस्सी ढ़ीली हुई और आस्तिक बन गये। स्वामी दयानन्द जी के प्रवचन में सबसे पहले और सबसे अन्त में जाने वाले बन गये। इस प्रभाव से सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय कर मांस भक्षण व शराब आदि कुकृत्यों को त्याग दिया।

मुंशीराम जी की बड़ी पुत्री वेदकुमारी ईसाइयों के विद्यालय में पढ़ने जाती थी। १९ अक्टूबर १८८८ के दिन मुंशीराम जी जब कचहरी से घर आये तभी देखते है कि- वेदकुमारी दौड़ी आई और गीत सुनाने लगी-

ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल।
ईसा मेरा राम रम्मैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।।

यह सुन मुंशीराम आश्चर्य चकित हो गये कि आर्य पुत्रियों को पढ़ाई के साथ विधर्मी बनने की प्रेरणा भी दी जा रही है। अतः अपना कन्या विद्यालय होना चाहिए, जिससे हमारी कन्याएँ सुशिक्षा के साथ-साथ अपने धर्म की श्रेष्ठता को पहचान सकें। ऐसा निश्चय कर जालन्धर में प्रथम आर्य कन्या विद्यालय की नींव रख दी।

इसी काल में मुंशीराम को अपने अभिन्न मित्र पं. गुरुदत्त के चले जाने का अत्यन्त दु:ख हुआ। अभी इस दु:ख से उभरे भी न थे कि पत्नी चल बसीं। इससे इनके जीवन में बहुत निराशा आ गई पर उनकी पत्नी द्वारा अन्तिम समय में लिखा पत्र पढ़कर अपने कार्य के प्रति और अधिक दृढ़ हो गये।

सत्यार्थ प्रकाश में लिखी पठन-पाठन विधि को साकार रूप देने के लिए मुंशीराम जी ने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली शुरु करने के लिए गुरुकुल खोलने का अपना निश्चय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सामने रखा। आवाज आई कि इसके लिए धन कहाँ से आयेगा? मुंशीराम ने बिजली की भाँति कड़क आवाज में कहा कि-जब तक गुरुकुल के लिए तीस हजार रूपये इकट्ठे न कर लूँ तब तक घर में पद नहीं रखूँगा। यह प्रतिज्ञा कर फकीर अपने घर से निकल गया और केवल मात्र छः मास में ही तीस हजार रूपये इकट्ठा कर समाज को एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। इस कार्य के लिए लाहोर में इनका अभिनन्दन हुआ और मुंशीराम से महात्मा मुंशीराम बन गये। जनमानस को पवित्र करने वाली गंगा के पवित्र तट पर हिमालय की गोद में दानवीर मुंशी अमन सिंह ने अपने गॉव कांगडी में सात सौ बीघा जमीन गुरुकुल के निमित्त दे दी। सन् १९०० ई. में गुरुकुल घास-फुस की झोपड़ी से आरम्भ हुआ। २ मार्च १९०२ में गुरुकुल की विधिवत् स्थापना हुई।

सर्वप्रथम मुंशीराम ने अपने दोनों पुत्रो हरिश्चन्द्र व इन्द्र को शिष्य बनाया और स्वयं आचार्य बने। अपना पुस्तकालय भी गुरुकुल को ही भेंट कर दिया। महात्मा मुंशीराम के सानिध्य को पाकर अनेकों अनभिज्ञ, अबोध बालक आर्ष विद्या रूपी गंगा में गोता लगाकर अगाध पाण्डित्य में प्रवीण हुए।

गुरुकुल ने अल्प काल में ही हिमालय के तुल्य उन्नति के उच्च शिखर को प्राप्त कर लिया। विरोधियों ने प्रचार किया कि गुरुकुल में बब बनते हैं। अंग्रेजी सरकार आतंकित हो गई। इसकी गूंज इग्लैण्ड तक जा पहुँची। ब्रिटिश सरकार ने अनेकों अधिकारियों को निरिक्षणार्थ गुरुकुल में भेजा परन्तु कुछ भी हाथ न लगा। जो था उसे समझ न सके। क्योंकि अल्पमतिमान् प्रत्यक्ष को भविष्य से तुलना करके नहीं चलते।

कुम्भ के पर्व पर आर्य समाज के प्रचार हेतु हरिद्वार में कैम्प लगाये गये थे। महात्मा गाँधी अपने सहयोगियों के साथ इस अवसर पर पधारे, उनका भव्य स्वागत किया गया। गाँधी जी के गुरुकुल कांगडी में पधारने पर महात्मा मुंशीराम जी ने एक समारोह आयोजित

किया। ८ अप्रैल १९१५ के दिन एक सुन्दर भावपूर्ण अभिनन्दन पत्र गाँधी जी को प्रदान किया। इसी में महात्मा मुंशीराम ने पहली बार उन्हें 'महात्मा' कहा था। इसके बाद में वह महात्मा गाँधी के नाम से विश्वविख्यात हो गयें।

१२ अप्रैल १९१७ के दिन प्रात: गंगा के पवित्र तट पर सन्यास की दीक्षा ले महात्मा मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बनें। उस समय हजारों की संख्या में जनसमूह, अनेक सन्यासी, पंण्डित व पदाधिकारीगण उपस्थित थे। महात्मा जी ने खड़े होकर घोषणा की-मैं सदा सब निश्चय परमपिता परमेश्वर की प्रेरणा से ही करता हूँ। आप सब प्रभु से प्रार्थना करें कि वह मुझे अपने इस व्रत को पूर्ण रूप से चलाने की शक्ति प्रदान करें।

संन्यास के बाद अपना सर्वस्व गुरुकुल को प्रदान कर सामाजिक कार्यों की ओर अग्रसरित हुए। तीस मार्च १९१९ ई. के दिन रोलट एक्ट के विरोध में सत्याग्रह प्रारम्भ किया। दिल्ली में इस सत्याग्रही सेना के प्रथम सैनिक व मार्गदर्शक स्वामी श्रद्धानन्द जी ही थे। सब यातायात बन्द हो गये। स्वतन्त्रता सेनानी पुलिस द्वारा पकड़े गये। भीड़ ने साथियों की रिहाई के निमित्त याचना की तो पुलिस ने उत्तर में गोलियों से जबाव दिया। सांयकाल के समय २०-३० हजार की अपार भीड़ एक ही पंक्ति में भारत माता की जय के नारे लगाती हुई घण्टाघर की ओर स्वामी जी के नेतृत्व में आगे बढ़ी। अचानक कम्पनी बाघ के गोरखा फौज के किसी सैनिक ने गोली चला दी। इससे जनता क्रोधित हो गई। लोगों को वहीं खड़े रहने का आदेश दे कर स्वामी जी आगे खड़े होते हुए बोले-तुमने गोली क्यों चलाई? सैनिकों ने बन्दूकों की संगीनें (नालें) आगे बढ़ाते हुए कहा कि-हट जाओं नहीं तो हम तुम्हें मार देंगे। स्वामी जी एक कदम और आगे बढ़ गये, संगीन छाती को स्पर्श कर रही थी। स्वामी जी शेर की भाँती दहाड़ते हुए बोले - मेरी छाती खुली है, हिम्मत है तो लगाओं अपना निशाना। अंग्रेज अधिकारी डर गये, संगीनों को झुका लिया। जुलूस आगे बढ़ता रहा।

इस घटना के बाद और अधिक उत्साह का वातावरण बन गया। ४ अप्रैल दोपहर की नवाज अदा करने के बाद मौलाना अब्दुल्ला चुड़ी वाले ने ऊँची आवाज में कहा कि-स्वामी श्रद्धानन्द की तकदीर होनी चाहिए। कुछ नौजवान स्वामी जी को ले आये। स्वामी जी ने जामा मस्जिद में मिम्बर पर खड़े होकर वेद मन्त्र **त्वं हि न: पिता वसो......** से अपना भाषण आरम्भ किया। भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के इतिहास में यह प्रथम घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम ने मस्जिद के मिम्बर से भाषण किया हो।

जलियाँ वाले काण्ड से त्रस्त पंजाब में कांग्रेस का अधिवेशन न करने पर विचार किया जा रहा था। स्वामी जी ने कहा कि यहाँ अधिवेशन जरुर होना चाहिए। इसका दायित्व मैं अपने ऊपर लेता हूँ। सर्वसम्मति से उन्हें स्वागताध्यक्ष बनाया गया। उनके बलबूते पर ही १९१९ का यह अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में सफलतम अधिवेशन रहा।

अमृतसर में अकालियों ने **'गुरु का बाग'** में सरकार के विरुद्ध मोर्चा खोला हुआ था। उसी समय स्वामी जी स्वर्ण मन्दिर में पहुँच कर अकालतख्त से एक ओजस्वी भाषण दे डाला। **'गुरु का बाग'** नामक वाटिका में पुलिस ने उन्हें पकड़कर १ वर्ष ४ महिने की सजा दे दी परन्तु पुलिस ने परेशान होकर १५ दिन में ही रिहा कर दिया। अमृतसर में स्थान-स्थान पर स्वामी जी का भव्य अभिनन्दन हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि कार्य प्रारम्भ किया। अपने भाईयों को बचाने के लिए मलखाना राजपूतों को स्वामी जी ने उनकी इच्छा से विधर्मी बनें लगभग २००० युवकों को आर्य समाज में समाहित किया। इसके बाद शुद्धि सभाएँ प्रारम्भ करायी गयी । गाँव-गाँव और शहर-शहर में अनेक मुस्लिम बनें भाईयों को पुन: वैदिक

धर्म में दीक्षित करने लगें, इससे क्रुद्ध कट्टर मुस्लिमों के स्वामी जी के पास रोजाना धमकी भरे पत्र आने लगे।

मुसलमान पूर्ण रूप से भड़क गये। स्वामी जी की हत्या का षड्यन्त्र रचकर २३ दिसम्बर १९२६ को मतान्ध अब्दुल रशीद ने स्वामी जी को गोली मारकर हत्या कर दी। सेवक धर्मसिंह ने पापी को पकड़ना चाहा चाहा तो उन्हें भी गोली का शिकार होना पड़ा, सेवक की जांघ में भी गोली लगी। भागते हत्यारे को स्नातक धर्मपाल विद्यालंकार ने दबा लिया व बाद में उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया। कल्याण मार्ग का पथिक, आर्य पथिक लेखराम के पथ का अनुगामी बना। २५ दिसम्बर शाम के समय यमुना के किनारे जनता अपने महान् समाजसुधारक के भौतिक शरीर को अग्नि की पवित्र ज्वालाओं को भेंट कर खाली हाथ लौट आई।

२३ दिसम्बर को आर्ष विद्या के उपासक परम श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है। इस दिवस को मनाने की सार्थकता तभी है जब हम उनके बताये मार्ग का अनुसरण कर सकें तथा वेदनिधि के प्रतिपादक की आवाज को सम्पूर्ण विश्व में गुंजा दें और गुरुकुल परम्परा को पुनः उसी स्वरूप में स्थापित कर दें, जो उनके समय में प्रसिद्ध थी कि-

आयेंगे खत अरब से जिनमें ये लिखा होगा।
कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा होगा।।

शिवदेव आर्य
गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून

भजन

-बहादुर सिंह
नगलाबिरखू, अलीगढ़

तर्ज : तन डोले मेरा मन डोले....

क्या बतलाऊँ? किस विधि गाऊँ? ऋषिवर तेरा गुणगान रे, हम आभारी उपकारों के।
घोर अंध विश्वास मिटाकर सच्ची राह दिखाई,
पाखण्डों का खण्डन करके ध्वज दिया लहराई?
धनी-दीन और शूद्र हीन सब कर दिये सिद्ध समान रे,
हम आभारी.................

अमर ग्रन्थ की रचना करके पोल खोल दी सारी,
हिले अखाडे पण्डित कापें टक्कर दई करारी,
वेद पढ़ा दिया फिर से बढ़ा तूने भारत का सम्मान रे,
हम आभारी.................

मातृभूमि सेवाव्रत लेकर उसको सदा निभाया,
गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा का सबको पाठ पढ़या,
जन-जन को जगा अज्ञान भगा किया पूर्ण सफल अभियान रे,
हम आभारी.................

गाय और नारी की गरिमा तुमने खूब बढ़ाई,
आर्यसमाज किया स्थापित ओ३म् ध्वजा फहराई,
दे दिया स्वराज 'बहादुर' भी आज तेरा क्या-क्या करें बखान रे,
हम आभारी.................

महर्षि दयानन्द की जरूरत क्यों?

-आचार्य डॉ. अजय आर्य

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ इस धरा पर हुए। उनका हृदय करुणा और मानव मात्र के प्रति प्रेम से भरा हुआ था। वे भ्रमण करने निकले। समाज के अच्छाई और बुराई पर विचार करते थे। वे जिधर जाते उन्हें हिंसा का अराजक वातावरण दिखाई देता था। हिंसा का तांडव हो रहा था। लाखों हजारों पशुओं की बलि चढ़ाई जा रही थी। धर्म के नाम पर हजारों मूक पशुओं की निर्मम हत्या की जा रही थी। इन हत्याओं को धर्म के ताने-बाने में लपेटा जा रहा था। मंदिरों तथा उपासना के पवित्र स्थल रक्त रंजित हो रहे थे। कोई आवाज नहीं उठाता था। सब चुप बैठे थे। सिद्धार्थ साहासी था। तार्किकता और मानवीय संवेदना से भरा चित्त उसे चैन से सोने न देता था। अजीब-सी बेचैनी उसे परेशान करती थी। उससे रहा न गया। उसने सवाल करने का निर्णय लिया। उसने समाज से पूछ, समाज के तथाकथित कर्णधारों से, पूछा-धर्मध्वजी ब्राह्मणों से पूछा, इस कुत्सित हिंसा और बलि के लिए जिम्मेदार कौन है? सबने एक ही स्वर में जवाब दिया वेद में लिखा है। यह वेदोक्त कर्म है।

उस युवक में जोश था, जूनून था। वह करुणा और मैत्री के भाव से भरा हुआ था। वह अनुचित को उचित मानने को तैयार नहीं था। चाहे वह किसी भी धर्मग्रन्थ में क्यों न लिखा गया हो। उसने कहा-जो वेद हिंसा को उचित मानता है, मैं उस वेद को नहीं मानता। वह वेद के खिलाफ हो गया। वेदपोषित धर्म के खिलाफ हो गया।

लगभग ढाई हजार वर्षों बाद इस घटना की फिर पुनरावृत्ति होती है। गुजरात के टंकारा ग्राम में तीव्र मेधा संपन्न प्रेम दया करुणा से परिपूर्ण ह्रदय वाले मूलशंकर का जन्म हुआ। सिद्धार्थ के जीवन में जीवन की चार अवस्थाओं के ज्ञान का जिक्र होता है। मूलशंकर ने भी चाचा और बहन की मृत्यु के रूप में जीवन के उसी सत्य का साक्षात्कार किया। वे मृत्यु को जानकर उससे परे जाने की बात सोचते थे। यही घटना उनके वैराग्य की सोपान बनी। उन्होंने सिद्ध, सन्तो, तपस्वियों का संग किया। कई-कई दिनों तक निराहार रहे। हिमालय की कंदराओं मे तपस्या की। बर्फीली नदियों को पार किया। समाधि में लीन रहे। गुरुवर विरजानन्द की शरण में शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। ज्ञान और तप के सर्वोच्च शिखर को छूआ।

वे भी अपने करुणापूर्ण चित्त से प्रेरित होकर गुरुदेव की आज्ञा लेकर देश का भ्रमण करने निकल पड़े। तथाकथित ब्राह्मणों का समाज में वर्चस्व था। सती प्रथा के नाम पर स्त्रियों को जिन्दा जलाया जा रहा था। स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार न था। बालविवाह, नारी-शिक्षा, विधवाओं पर अत्याचार अंधविश्वास, पाखण्ड, जातिप्रथा जैसी न जाने कितनी कुरीतियों ने समाज को जकड रखा था। बलिप्रथा के नाम पर रक्त तब भी बह रहा था। इस दृश्य ने मूलशंकर (दयानन्द) को हिलाकर रख दिया। मानवीय संवेदना से भरा उनका चित्त बेचैन हो उठा। वे रात को उठकर रोते थे जब सारा आलम सोता था।

वही सवाल, जो ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने उठाया फिर उठा। इस कुत्सित हिंसा और बलि के लिए जिम्मेदार कौन है? मानव मानव के बीच ऊँच-नीच की रेखा किसने खींची। नारी को पढ़ाने का अधिकार क्यों नहीं है। सबने एक ही स्वर में फिर वही जवाब दिया-वेद में लिखा है। यह वेदोक्त कर्म है।

सवाल भी लगभग वही था। जवाब भी वही था। अन्तर था मूलशंकर और सिद्धार्थ की प्रतिक्रिया में। सिद्धार्थ ने बिना क्षण गंवायें कह दिया-मैं ऐसे वेद को नहीं मानता, जो समाज को हिंसा की प्रेरणा देता है। मूलशंकर (महर्षि) ने कहा-मुझे दिखाओं तो सही वेद में लिखा कहाँ है? मैं वेद का स्वाध्याय करूँगा। वेद पढूँगा, उसका आलोडन करूँगा, मंथन करूँगा, विवेचन करूँगा। महर्षि वेद के खिलाफ नहीं हुए। उन्होंने वेदों को पढ़ा और पाया कि-वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

उन्होंने वेद को इतनी गहराई से पढ़ा कि वे वेदों वाले स्वामी ही बन गए। वैदिक ज्ञान को विज्ञान से जोडने वाले आधुनिक युग में वे प्रथम व्यक्ति थे। अगर दयानन्द नहीं होते तो शायद हम सबके घर में एक सिद्धार्थ होता, जो

वेद और तत्पोषित धर्म को नकार रहा होता। महर्षि ने न जाने कितने नास्तिकों को आस्तिक बनाया। तर्क सम्पन्न, आंग्लशिक्षा से प्रभावित मुंशीराम और गुरुदत्त जैसे न जाने कितने युवाओं के मलीन मन को महर्षि के जीवन ने वैदिक आस्था के गंगा जल से परम पावन और प्रेरक बना दिया था।

महर्षि दयानन्द की सामयिकता

आज गली-गली में शराब की दुकाने हैं। शिक्षा की सजी हुई तथाकथित दुकानों में चरित्र को ताक पर रखा जा रहा है। माँ-बाप वृद्धाश्रम की शोभा बन रहे हैं। युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों से दूर हो गई है। नित नए-नए गुरुओं का डंका बज रहा है। देश की जनता को बरगलाकर कृपा का कारोबार किया जा रहा है। आज अगर हम अपनी पीढ़ी को भौतिकता की चकाचौंध में खोते हुए नहीं देखना चाहते तो वे (महर्षि दयानन्द) सामयिक है। आज अगर हम नहीं चाहते की हमारी पीढ़ी नैतिक मूल्यों से दूर हो तो वे सामयिक है।

देश के सामने एक बड़ी चुनौती है। अज्ञान, अन्याय और अभाव को दूर करने में हम असमर्थ रहे है। अज्ञान से लडने वाले ब्राह्मणों का समाज में अभाव है। अन्याय से निजात दिला सकने वाली क्षात्र शक्ति कहीं अदृश्य हो गई। समाज का अभाव दूर कर सकने वाले वैश्य कहीं दिखाई नहीं देते। वर्णव्यवस्था के बिना इसका समाधान कैसे होगा? अज्ञान के अभाव में अंधविश्वास तथा पाखंड का प्रचार हो रहा है। वर्णव्यवस्था के सामाजिक मनोविज्ञान को दयानन्द के बिना समझा नहीं जा सकता। फलित ज्योतिष और कृपा का कारोबार करने वालों की कतार दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ रही है। मंदिरों के नाम पर करोडों का वारा न्यारा किया जा रहा है। जिन मन्दिरों को समाज सुधार का केन्द्र बनाना था, वे अपनी ही रोटी सेंकने में मस्त हो गए हैं। धर्मस्थलों को व्यभिचार तथा व्यसन का केन्द्र बनाने में कोई ज्यादा देर नहीं है। भारतीय धर्म तथा अध्यात्म को नीचा दिखाने की नित नई कोशिश की जा रही है। महर्षि दयानन्द के तर्क तीक्ष्णशरों के बिना इस महायुद्ध में विजयी नहीं बना जा सकता। वेदादि शास्त्रों तथा तत्पोषित धर्म की रक्षा के लिए महर्षि के विचारों की सामयिकता हमेशा बनी रहेगी।

जब-जब वेदों की सामयिकता तथा उसकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि की चर्चा होगी **'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'** की याद जरुर आयेगी। जब धर्म की आड में पल्लवित इन विविध सम्प्रदायों, पन्थों के विश्लेषण की गहराई में कोई उतरने का साहस करेगा **'सत्यार्थ प्रकाश'** का प्रकाश उसका मार्ग प्रशस्त करेगा। जब कभी मानव निर्माण की विधि को खोजने का प्रयास किया जायेगा, **'संस्कार विधि'** मानव निर्माण के विज्ञान को परिभाषित करती हुई परिलक्षित होगी। मानव व्यवहार के विज्ञान की समझ को जब आगे बढाने की कोशिश की जायेगी महर्षि दयानन्द प्रणीत **'व्यवहारभानु'** मानव मनोविज्ञान के आकाश में अपनी किरणें प्रसारित करता नजर आएगा। जब-जब समाज सुधारकों की गणना की जायेगी समाज सुधारक महर्षि दयानन्द उस आकाश में चमकते हुये 'ध्रुव' तारे की भांति दिखाई देंगे। महर्षि ने वैदिक ध्वजा लेकर पुरातन ज्ञान के जल से नवीन जगत के क्षेत्र सींचा है। नारी को अबला से सबला बनाकर उन्होंने गार्गी, मदालसा और दुर्गा तक बनने का अधिकार दिया। नारी जाति के सच्चे अधिकारी वहीं हैं। जाति-पाति का भेद भूलाकर उन्होंने कहा कि हम सब ईश्वर पुत्र है-**'श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः'**।

वेदादि शास्त्रों के माध्यम से स्वदेश प्रेम का अलख जगाने वाले वे पहले व्यक्ति थे। उनका मानना था कि-**'जो स्वदेशी राज्य होता है, वो सर्वोपरि होता है।'**

महर्षि दयानन्द सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के निर्माता हैं। धर्म को तर्क की कसौटी पर कसने वाले वे पहले धर्मगुरु हैं। सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान उन्हीं का है। महर्षि के विचार आज भी आधुनिक हैं। महर्षि दयानन्द आज भी सामायिक हैं। उनके विचार हमारी तर्क शक्ति को जीवित करतें हैं। महर्षि दयानन्द की आँखे हमारा मार्ग प्रशस्त करती हैं।

आर्य समाज का प्रचार कार्य–

आर्यसमाज प्रचार कार्य में पहले जैसा जोश नहीं देख रहा है। हम बड़े-बड़े सम्मेलनों में उलझे हुए हैं। सम्मेलनों में भीड़ के नाम पर आस-पास के आर्यजन जुट जाते हैं। महर्षि दयानन्द जी का जय बोल कर घर लौट आतें है। मुझे लगता है कि यह वेद अथवा आर्यसमाज के प्रचार का कार्य नहीं है। किसी भी सम्मेलन को तब ही सफल मानना चाहिए जब उपस्थित जन-समुदाय का कम से कम दस प्रतिशत भाग गैर आर्यसमाजी हो। अगर हम अपने से इतर लोगों को नहीं जोड़ पा रहें हैं तो हमें आर्यसमाज के प्रचार के तरीके पर सवाल खड़ा करना चाहिए। प्रचार के लिए बड़ी-बड़ी धनराशि की ही जरूरत नहीं होती। बहुत छोटे-छोटे कार्यों की आधारशिला रखी जा सकती है।

आर्यसमाज को सामायिक अवसरों पर महर्षि के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कार्य करना चाहिए। समाचार-पत्रों और फ्लेक्स के बैनर तैयार करके आर्यसमाज के मुख्य मार्गों में लगाया जाना चाहिए। आर्यसमाज के बाहर वैदिक विद्वानों की सूची उनके सम्पर्क दूरभाष संख्या के साथ लगाई जा सके तो अच्छा है। श्राद्ध, नवरात्र, दीपावली, तीर्थ, स्नान तथा भारतीय पर्वों आदि के अवसरों पर महर्षि दयानन्द के हृदयस्पर्शी वाक्यों का प्रचार किया जाना चाहिए। वैदिक सत्संगों के स्तर को ऊपर उठाने की कोशिश की जानी चाहिए। हम छोटे-छोटे विज्ञापनों में स्वामी जी के विचारों के आधार पर छोटे-छोटे लेख तैयार करके जनता तक पहुँचा सकतें हैं। इन प्रयासों के माध्यम से अच्छा प्रचार होता है। आर्यसमाजियों के बीच आर्यसमाज का प्रचार मुझे तो बेइमानी लगता है।

आर्यसमाज को अपने जनोपयोगी सर्वहितकारी सिद्धान्तों तथा कार्यों को आगे ले जाने का कार्य करने की जरुरत है। आर्यसमाज को अपने सत्संगों में आस-पास के विशिष्ट लोगों को भी विशेष अवसरों पर आमन्त्रित करके यजमान बनने की प्रेरणा देनी चाहिए। आर्यसमाज अपने विद्वानों तथा धर्माचार्यों का उपयोग भी आर्यसमाज के प्रभाव को बढ़ाने तथा प्रचार करने के लिए कर सकता है। धर्माचार्यां के कर्मकाण्ड से अनेक श्रद्धालु लोग जुड़े होतें हैं, उन्हें आर्यसमाज का साहित्य भेंट किया जा सकता है। आर्यसमाज की गतिविधियों से सम्बन्धित विज्ञापन उन तक पहुँचाएँ जा सकतें है। आर्यसमाज के लिए दान भी एकत्रित किया जा सकता है। हम जब दिल्ली में थे तो हमने देखा था कि आर्यसमाज के धर्माचार्य कर्मकाण्ड कराते समय अपने साथ आर्यसमाज की दान-रसीद रखते थे। इससे आर्यसमाज के प्रचार के लिए पर्याप्त धन एकत्रित हो जाता था। धन-संग्रह की यह परम्परा मुझे बहुत सार्थक लगी। आर्यसमाज अपने ऐसे श्रद्धालुओं, जो सिर्फ कर्मकाण्ड के लिए आर्यसमाज में आतें हैं, उनको भी आर्यसमाज से जोड़ जा सकता है। ऐसे सज्जनों को स्वमंतव्यामंतव्य प्रकाश जैसी छोटी-छोटी पुस्तकें भेंट की जा सकती हैं। आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई विभिन्न अवसरों पर नि:शुल्क पुस्तक वितरण का कार्य करता है। वे इसके लिए धन्यवाद तथा साधुवाद के पात्र हैं। इस कार्य को योजनाबद्ध ढंग से प्रभावी बनाया जाये तो ज्यादा उपयोगी होगा। आर्यसमाज बैजनाथ पारा विवाहित जोड़ों को सत्यार्थ प्रकाश वितरित करता है। सत्यार्थ प्रकाश को समझने तथा पढ़ने के लिए बुद्धि तथा मनोभावों का विशिष्ट स्तर अपेक्षित होता है, जो प्रथम बार आर्यसमाज के सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति में नहीं होता है। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों से ओत-प्रोत गृहस्थ जीवन पर लिखी हुई पुस्तकें भेंट की जा सकतीं हैं। अगर आर्यसमाज की किसी पत्रिका का वार्षिक सदस्य उन्हें बनाया जाये तो यह आर्य पत्रिकाओं के लिए जीवनदायी भी हो सकता है।

आर्य वैदिक सत्संग :-

आर्य वैदिक सत्संग को भी वेदप्रचार का केन्द्र बनाया जा सकता है। पाखंड और अन्धविश्वास का प्रसार करने तथा गुरुडम फैलाने वाले सत्संगों की भीड़ बढ़ती जा रही है। प्रत्येक आर्यसमाज को महीने में एक विशिष्ट वैदिक सत्संग का आयोजन करना चाहिए। इसकी योजना प्रथम सप्ताह में ही तैयार कर ली जानी चाहिए। आस-पास के विशिष्ट आर्यवक्ता को उद्बोधन हेतु आमंत्रित किया जाना चाहिए। सम्भव हो तो माह में आने वाले विशिष्ट त्योहारों पर्वों में ऐसे आयोजन किये जाएँ।

आधुनिक भारत

-ब्र. गौरव आर्य, गुरुकुल पौन्धा

उज्ज्वल वरदान धरातल का,
सौन्दर्य जिसे सब कहते थे।
राम-कृष्ण सम महापुरुष तब,
सदा ही जिसमें रहते थे।।

आज उसी भारत-भू पर,
अन्याय व पाखण्ड फैला है।
इस धर्म-कर्म के गढ़ में अब,
सब दुराचार ही फैला है।।

इस भारत-भू के आँगन में,
हर जगह गरीबी छाई है।
ममता व मानवता में अब,
नफरत की गहरी खाई है।।

मंहगाई ही महंगाई है,
कृषक अब बैठे रोते है।
रंक मनुज के घर में तो,
बालक भी भूखें सोते हैं।।

पुरुषों की यही दशा है तो,
सोचो वनिता की क्या होगी?
वह बेचारी अबला तो अब,
स्वप्नों में भी रोती होगी।।

यह दुःख आज की नारी का,
क्यों असह्य होता जाता है?
धनश्याम खण्ड-सी आँखों में,
क्यों सहसा जल भर आता है?

इस बात का उत्तर देने को,,
बस ये ही अक्षर काफी है।
आज की वसुन्धरा का नर,
अब बन बैठा महापापी है।।

कुर्सी पर जो चिपके बैठे,
गुणगान वे वोटो का करते।
जनता का पैसा लूट-लूट,
वे निज खातों को हैं भरते।।

नहीं ध्यान उन्हें जनता का है,
बस काम स्वहित का वे करते।
ऐसा ना होता तो यहाँ पर,
क्यों सिर फौजियों के कटते।।

हत-भाग्य भारत वर्ष तू,
क्या था कभी क्या हो गया?
असंदिग्ध है कि अब तो तू,
आदर्श निज का खो गया।।

फैला रहा था जो जगत् में,
वेदों के दुर्लभ ज्ञान को।
आज वो ही है खुद ढूँढता,
उस स्व अमर विज्ञान को।।

संसार भर मे जो कभी,
सर्वोपरि गुरु रह चुका।
वही आज भारत वर्ष यही,
शिष्यत्व को भी खो चुका।।

एक रश्मि सी जो आई थी,
अंधियारे में उजियाले की।
उस नेक किरण ने शरण यही,
अब स्वयं सबके रखवाले की।।

नर! उठो, न तुम अब देर करो,
एक नया सवेरा लाने को।
सम्पूर्ण जगत् में तुम पुनः,
निज '**गौरव**' को दिखलाने को।।

स्वस्थवृत्तम्-

राजवृक्षः (आरग्वधः)

- ले.डॉ. सत्येन्द्र कुमार आर्य....✍

सुन्दर पीतपुष्पों की माला धारण करने वाला : अमलताश

महर्षि चरक ने अमलतास को तिक्तस्कन्ध और विरेचनवर्ग तथा आचार्य सुश्रुत ने अधोभागहर पढ़ा है। उसका वृक्ष मघ्यम आकार का २५ -३० फीट ऊँचा होता है। काण्ड-सरल और काण्डत्वक् हरिताभ घूसरवर्ण अथवा किंचित् रक्ताभ होती हैं। पत्र-संयुक्त,लगभग एक फुट लम्बा होता है जिसमें ८-१६ जोड़े पत्रक लगे होते हैं। पुष्प-पीले रंग के,गुच्छों में और सुगन्धित होते हे। पुष्पदल-संख्या में ५ ओर पुंकेसर १० होते हैं जिसमें ३ बहुत बड़े और ३ बहुत छोटे होते हैं। पुष्पदण्ड-पत्र के समान ही लम्बा होता है। फल-१-३ फुट लम्बा,१ इंच मोटा,कठिन,नुकीला और बेलनाकार होता है। यह कच्ची अवस्था में हरे रंग का और पकने पर कृष्ण वर्ण का हो जाता है। फलमज्जा-गहरे काले रंग की,पैसे (सिक्के) के आकार के खण्डों में एक दूसरे के ऊपर व्यवस्थित होती है। बीज-अनेक,चपटे,कोमल,चिकने पीताभ और धूसरवर्ण के होते हैं जो फलमज्जा के बीच में पड़े रहते हैं।

यह समस्त भारत में होता हे। कई लोग सौन्दर्य के लिये अपने बगीचों में इसे लगाते हैं। इसके अन्वर्थ परिचायक बहुत से नाम हैं,जो निम्न प्रकार हैं-ले०-Cassia Fistula = भगन्दर बूटी, आरग्वध = रोगों को नष्ट करने वाला, कृतमाल = पुष्पों की माला धारण करने वाला, अं०-Drum Stick Œr Purging Cassia = ढोल बजावन दण्डा अथवा दस्तावर बूटी आदि। यह रस में मधुर,तिक्त और गुण में गुरु,मृदु,स्निग्ध है और विपाक मधुर वीर्य शीत है । यह मधुर और स्निग्ध होने से वात तथा शीत होने से पित्त का शमन करता है। रेचन होने से कोष्ठगत पित्त और कफ का संशोधन भी करता हैं।यह शोथहर, वेदनास्थापन एवं कुष्ठघ्न है। यह तिक्त होने से रुचिवर्धक और यकृदुत्तेजक तथा स्निग्ध होने से अनुलोमन और स्रंसन हें। यह मृदुविरेचन द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह हृद्य,रक्तशोधक और शोथहर है। यह शीत होने से मूत्रप्रजनन और त्वचा-कुष्ठघ्न एवं दाहप्रशमन है। तापक्रम- यह तिक्त होने से आमपाचन तथा पित्ताशामक और स्रंसन होने से कोष्ठगत मलों को दूर करता है। इस कारण से ज्वरघ्न है।

प्रयोज्य अंग- फलमज्जा, मूलत्वक्, पुष्प, पत्र।।

मात्रा- फलमज्जा- १५ से २५ ग्राम (विरेचनार्थ-२५ से ५० मि०लि०।

मूलत्वक् क्वाथ- १२ स्रे २५ ग्राम, पुष्प- २ से ३ ग्राम, पत्रों का बाह्य प्रयोग ही होता है। विशिष्टयोग-आरग्वधादि तैल, आरग्वधादि अवलेह, आरग्वधारिष्ट।

संग्रह विधि- इसके पके फलों को सात दिन तक रेत के अन्दर दबा दें फिर निकाल कर धूप में सुखा लें। खूब सूख जाने पर फलमज्जा निकाल कर शुद्ध पात्र में सुरक्षित कर प्रयोग करें।

'ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम्'(भा.प्र) ' चतुरंगुलो मृदुविरेचनानां-श्रेष्ठः ' (चसू.२५)

-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

बढ़ते मानव कदम एक अनिष्ट सूचक संकेत

-यशोदेव आर्य

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बढ़ते हुए मानव कदम तथा बढ़ता हुआ औद्योगिकरण एवं मानव सभ्यता द्वारा सम्पूर्ण शारीरिक सुख-सुविधाओं का अविष्कार अवश्य एक सराहनीय कदम है परन्तु जिस प्रकार से मानव पृथ्वी के खनिज पदार्थों के दोहन में लगा हुआ है, इससे तो ये भविष्य की पृथ्वी के लिये अनिष्ट सूचक संकेत है।

सम्पूर्ण विश्व के इतिहास में ऐसा कोई दूसरा आंदोलन नहीं हुआ, जिसने मानव सभ्यता की चिन्तन तथा कल्पना शक्ति को पूर्णतः जकड़ लिया हो, जितना कि हरित आंदोलन ने। सन् १९७२ में संसार के प्रथम हरित दल की स्थापना न्यूजीलैण्ड में हुई थी। मानव इतिहास में पहली बार इतनी सजगता तथा चेतना आई है, जिसके तहत मानव भी मानने लगा है कि पृथ्वी भी हमारी तरह एक जीवित संघटना है जिसके हम सभी अंग है और यही पृथ्वी हमारे जीवन की सम्पूर्ण मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करती है। जिसके कारण आज हम इतने साधन सम्पन्न तथा अय्याश बने हुए हैं कि हमने अपनी माँ तक की उपेक्षा कर दी। क्या हमें अपनी माँ के साथ ऐसा करना चाहिए? क्या यह हमारी अपनी माँ नहीं, जिसकी इस प्रकार से अवहेलना की जा रही है। हे मानव! तू जागता हुआ भी सोया हुआ है। क्योंकि तुझे पता ही नहीं कि तू क्या कर रहा है? हे मानवचोलाधारी आत्माओं! सचेत हो जाओं, क्योंकि अब, इन प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने के बजाय इन्हें संरक्षित तथा विकसित करने की आवश्यकता है। एक ऐसा विकास जो भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं के संरक्षित करते हुए वार्तमानिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति करें अर्थात् प्राकृतिक संसाधनों को लूटे बिना भविष्य के लिये संजोना। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पृथ्वी में रह रहे प्राणियों का आधार स्तम्भ यहाँ की चार मुख्य जैव प्रणालियाँ है-मत्स्य, घास के मैदान, वन एवं कृषिभूमि। ये चारों जैव प्रणालियाँ हमें हमारे भोजन के साथ-साथ लगभग समस्त पदार्थ प्रदान करती है। छोड़ के केवल औद्योगिक संसाधनों के लिए उपयोगी खनिज पदार्थों जैसे पैट्रोलियम गैस आदि परन्तु वर्तमान में इनकी उत्पादकता क्षीण हो रही है और उद्योग धंधों की वृद्धि, हमें इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है नहीं तो यह भविष्य के लिए अनिष्ट सूचक संकेत भी हो सकता है।

आज वैज्ञानिकों ने लगभग १४ लाख सजीव प्रजातियों की खोज कर ली है, जिनके साथ हम इस धरती का उपभोग कर रहे हैं और विचारणीय बात यह है कि ३० लाख से १ अरब के लगभग ऐसी प्रजातियाँ भी हैं, जिनका प्रकाश अभी तक सम्भव नहीं हो पाया है। उपरिलिखित बातों से इतना तो पता लग गया कि इस पृथ्वी पर हमसे भिन्न भी अनेकों ऐसे घटक हैं जो इस धरा का उपभोग कर रहे है परन्तु क्या अब हम इतने स्वार्थी हो गए कि दूसरों को सर्वथा भूल गए। इस समय ऊष्ण कटिबंधीय वनों की हमारी सम्पदा ४ से ५ करोड़ एकड़ प्रतिवर्ष समाप्त हो रही है जो कि हमारी स्वार्थन्धता को दर्शाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जलाने में गोबर का उपयोग धरती को एक महत्वपूर्ण खाद से वंचित कर रहा है। जलावन ईंधन का उपयोग करने के लिये हम जिस दर से वनों का सफाया कर रहें हैं। इस स्थिति में हमें वृक्षारोपण की दर में भी कम से कम १० प्रतिशत वृद्धि करने की जरुरत है

तभी हमें तथा हमारे उत्तराधिकारियों को जलावन के लिये ईधन की आवश्यकता की पूर्ति हो सकेगी, अन्यथा नहीं। श्वविश्वासनीय आंकडों के अनुसार भारत में वन ३७ लाख एकड़ प्रतिवर्ष समाप्त हो रहे हैं। हालांकि अब इसमें सुधार हुआ है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व में बढ़ता जनसंख्या घनत्व मानव समाज का तथा पर्यावरण के अति ह्रास का प्रमुख तथा सबसे बड़ा कारण हैं। मानव समाज की जनसंख्या को १ अरब तक पहुचने में जहाँ लगभग १० लाख वर्ष लगे वहीं अब हर चार दिन में १० लाख बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में विकास तब तक सम्भव नहीं जब तक जनसंख्या में वर्तमान की तरह वृद्धि होती रहेगी। इसके विकल्प में बिना जबरदस्ती किए अपनी मर्जी से परिवार नियोजन को अपनाने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है और जब तक जनसंख्या नियंत्रण को सर्वाधिक प्राथमिकता नहीं दी जाएगी, तब तक लोगों की उम्मीदें उनके सपनों में ही मरती रहेंगी। मानव इतिहास में पहली बार बढ़ती हुई चिन्ता देखी जा रही है न केवल इंसान के बारे में बल्कि ग्रह के बारे में भी। पर्यावरण की समस्या भविष्य के साथ-साथ हमें हमारे अंत की ओर भी इंगित करती है। तो क्या हमें अपने उत्तराधिकारियों के लिए एक मरुस्थलीय कमजोर हो चुकी धरती वाला एवं बेहद खराब पर्यावरण वाला जला-भुना ग्रह छोड़कर जाना चाहिये ? या फिर इसे सुरक्षित तथा सभी जीवों के अनुकूल एक स्वार्गिक सुख प्रदान करने वाले ग्रह का निर्माण करना चाहिए।

ड्यू पोन्ट के चेयरमैन श्रीमान् एडगर एस वूलर्ड ने कहा था कि-'Our continued existence as a leading manufacturer requires that we excel in environmental performance.

मुख्य उत्पादक के रूप में हमारा अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम पर्यावरण की उपलब्धियों के लिए उत्तम कार्य करें।

कृषि के लिये उपयुक्त रसायनों का अन्धाधुन्ध प्रयोग कृषि के लिये तथा भूमि के लिये हानिकारक है, ये रसायन कुछ समय के लिये तो धरती की उपज क्षमता को बढ़ा देते हैं परन्तु बार-बार इन रसायनों का उपयोग धरती में मौजूद उसके स्थायी उपजाऊपन को तथा इसके जरुरी पोषक तत्वों को नष्ट प्रायः कर देता है, जिससे एक उर्वरक तथा उपजाऊ भूमि बंजर में परिवर्तित हो जाती है, जिसका प्रभाव कृषि जीवन पर पढ़ता है एवं यह प्रकृति के लिये भी नुकसान देह है। आज यह सम्पूर्ण ग्रह ग्लोबल वार्मिग की समस्या से जूझ रहा है, जिसके दो प्रमुख तथा सबसे बड़े घटक हैं-पॉलीथीन व प्लास्टिक। वैज्ञानिक शोधानुसार आज हम जिस पॉलीथीन व प्लास्टिक का प्रयोग करते हैं एवं कूडे में फेंक देते हैं उसे मिट्टी बनने में लगभग ३०० वर्षों का समय लगता है और ये इन तीन सौ वर्षो के अंतराल में न जाने कितना कार्बन उत्सर्जित कर देते है। इसलिए हमें हर सम्भव प्रयास करना चाहिये कि पॉलीथीन व प्लास्टिक से यथासम्भव दूरी बनी रहे एवं अपने आस-पास के नागरिकों को भी इसके लिए जागरुक करते रहें अपने आस-पास के क्षेत्र की सफाई का भी विशेष ध्यान रखें। अन्तिम में कुछ पंक्तियाँ उद्धृत कर अपनी लेखनी को विराम दूँगा-

सर्वे वै तत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधि जीवनायकम्। अर्थात् इन परिधियों (पर्यावरण) के प्रदूषित होने पर मनुष्य, पशु, वनस्पति सभी का विनाश सम्भव है।

No generation has a free Hold on this earth.

इस पृथ्वी पर किसी भी पीढ़ी को स्वामित्व रखने का अधिकार नहीं है। **-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून**

निमन्त्रण-पत्र

आप सभी को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आर्यों का तीर्थस्थल ११९ गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली-४९ का ८० वाँ वार्षिकोत्सव एवं ३४ वाँ चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ **२५ नवम्बर सोमवार** से **२२ दिसम्बर रविवार २०१३** तक पूर्व वर्षों की भाँति विभिन्न भव्य सम्मेलनों के साथ सम्पन्न होगा। चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड पण्डित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य **डॉ. वेदप्रकाश जी** (हरिद्वार) यज्ञ के ब्रह्मा होंगे । महायज्ञ में आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर आप स्वयं यजमान बनकर दूसरों को प्रेरित कर पुण्य के भागी बनें तथा यज्ञ में दान देकर गुरुकुल की सहायता कर कृतार्थ करें। आपके द्वारा दिया गया दान पर ८० जी के अन्तर्गत छूट प्रदान की जायेगी।

पं. नारायणमुखर्जी की पावन पुण्यस्मृति पर दिनांक १५ दिसम्बर २०१३ को **संस्कृतभाषण-शास्त्रस्मरणप्रतियोगिता** आयोजित की जा रही है। इस प्रतिस्पर्धा में संस्कृत भाषण, यजुर्वेद, सामवेद, अष्टाध्यायी एवं पाणिनि के अन्य चारों ग्रन्थों (लिंगानुशासन, उणादिकोष, धातुपाठ, गणपाठ) को सुनाने वाले प्रतिस्पर्धी छात्र-छात्रों को विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट www.pranwanand.org पर लोग इन कर सकते हैं।

आप सभी अपने इष्ट मित्रों एवं परिवार वालों के साथ पधार कर धर्म लाभ प्राप्त करें।

निवेदक:-

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

एवं समस्त अधिकारी व सदस्य, वेदार्ष-न्यास

website: www.pranwanand.org

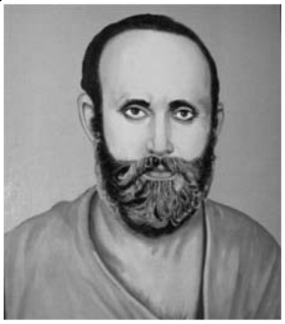

अथ श्री ओमानन्द लहरी

– आचार्य यज्ञवीर व्याकरणाचार्य

सहृदया:! पाठका: पत्रिकाया: अस्मिन् संस्कृतभागे श्री ओमानन्दलहरी नामकं पुस्तकं गतमासात् प्रभृति क्रमश: प्रकाश्यते। श्लोकानामार्यभाषा अपि आचार्य धनञ्जयकृता सहैव प्रकाश्यते येन बोधगम्यता स्यादिति – **कार्यकारिसम्पादक:**

क्रमश:............

आभास: तस्या: प्रबलतरधाराया एका सुधारा गुरुकुलझज्जरे वहतीति वर्णयन्नाह–

सुधारैका तस्या: प्रवहति कुले झज्जरगते,
सदोमानन्दाद्या हृदयविगता ज्ञानसुखदा।
सुशिष्यैर्मूर्धन्यै: प्रमुदितमना भातिकुलभू:,
प्रदत्ता या विप्रै शुभगुणगणै: सा सुरुचिरा।।११।।

व्याख्या– तस्या:=तस्या: पूर्वोक्ताया आर्षप्रणाल्या: एका=अन्यतमा, सुधारा=ज्ञानरुपिणी शोभना धारा या हि सदोमानन्दात्=सज्जनात् ओमानन्दाख्यात् आचार्यात् (सत् २२ विद्वत्नामसु पठति–अमर २.७.५) सत् चासौ ओमानन्द: तस्मात्–अस्ते: शतृ अकारलोपे च कृते सत्) विद्यमानात् सज्जनात् वा हृदयविगता=हृदयाद् उद्‌गता विशेषरूपेण प्रादुर्भूता, ज्ञानसुखादा=ज्ञानरुपं सुखं ददातीति 'आतोऽनुपसर्गेक:' इति क: प्रत्यये स्त्रियां टापि च कृते रुपं निष्पन्नं सुखदा इति 'झज्जरगते=झज्जराख्ये स्थिते कुले , गुरुकुले प्रवहति प्रकृष्टरुपेण प्रवहमाना विद्यते अनवरतं प्रवहतीत्यभिप्राय:। सा कुलभू:=सा गुरुकुलभूमि:, कुलमाता मूर्धन्यै:=सर्वोत्तमै: प्रमुखै: (मूर्धन्+यत् मूर्ध्नि भव) 'तत्र भव' सूत्रेण तै: सुशिष्यै: शोभनै: शिष्यै: पुत्रै:, सुरुचिरा=शोभना उज्ज्वला, (रुचिं राति ददाति रुच्+किरच्+टाप् स्त्रियां कृते रुपम्, 'सुन्दरं रुचिरं चारु' इति कोषे। प्रमुदितमना=प्रमुखदितं मनो यस्या: सा प्रमुदितमना प्रसन्नचित्ता, 'चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मन: इति पर्याया:' या खलु शुभगुणगणै:=श्रेष्ठगुणसमूहै: श्रीमद्भिर्विश्वम्भरदत्तनामकै: विप्रै:=ब्राह्मणमहाभागै: प्रदत्ता=दानरुपेण गुरुकुलायोपहारी कृता सा (कुलमाता) भाति विराजते, सुशोभते इति।

आर्यभाषा– उस आर्षप्रणाली की एक सुन्दर धारा गुरुकुल झज्जर में बह रही है। वह धारा सज्जन ओमानन्द के हृदय से प्रादुर्भूत ज्ञान रुपी सुख देने वाली है। वह गुरुकुल भूमि माता अपने उच्च कोटि के मूर्धन्य सुशिष्यों से प्रसन्नचित्त सुशोभित है, जो कि शुभगुणों के समूह विप्रवर विश्वम्भरदत्त द्वारा प्रदान की गयी अति सुन्दर भूमि है।।११।।

आभास: वैराग्यमापन्नो योगीराट् स्वपैतृकभूमिं गुरुकुलाय प्रादादिति वर्णयन्नाह–

स्वकीयै: पुण्यैर्वै विपुलधनराशे: पतिरयम्,
सुरम्यश्चाराम: खलु सजलकूपै: परिवृत:।
कृषेर्योग्या भूमि: त्रिशतमितबीघा समभवत्,
सुयोगी वैराग्याद् गुरुकुलकृतेऽदादमलधी:।।१२।।

व्याख्या– स्वकीयै: पुण्यै:=निजपूर्वार्जितसत्कर्मप्रभावै:, पवित्रै: कृत्यै: अयम्=एष: गुरुवर्य: विपुलधनराशे:= विपुलसम्पत्ते: समूहस्य पति:=स्वामी (अभूत्) सुरम्यश्चाराम:=शोभन: रमणीयक: आराम: उद्यानम्, सजलकूपै:=वारिप्रपूरितैरन्धै: (अन्धुरन्ध प्रहि कूप: इति कोषे) परिवृत्त:=परित: सर्वत: सनाथीकृत: युक्त इत्यभिप्राय (आसीत्) त्रिशतमितबीघा=३०० बीघा मिता भूमि:, कृषेर्योग्या=कृषिकार्यायोपयुक्ता उर्वरा भू: समभवत्=आसीत् सुयोगी=श्रेष्ठो योगी, संन्यासी अमलधी:=पवित्रबुद्धि:,वैराग्यात्=ज्ञानस्य

पराकाष्ठाकारणात् गुरुकुलकृते=कन्यागुरुकुलार्थ तदवश्यकतानुसारम् अदात्=अयच्छत्।

आर्यभाषा- अपने पूर्वार्जित पुण्यों के कारण विपुल धनसम्पत्ति के स्वामी बनें। पानी से भरपूर कुओं से युक्त सुन्दर बाग था एवं ३०० बीघा कृषि योग्य उपजाऊ जमीन भी थी। शुद्ध बुद्धि योगीराज ने वैराग्य के कारण बहुत सी जमीन गुरुकुल नरेला को दान में दी।।१२।।

आभासः पित्रास्थापितस्य आर्यसमाजस्य विकासं विधाय स्थायित्वप्रदानं कृतं तदेव वर्णयन् आह-

समाजं ह्यार्याणां कृषककनकोऽस्थापयदिह,
पुनश्च स्थायित्वं कनकतनयोऽदादनघकृत्।
नरेलाख्ये ग्रामे युवकशिविरायोजनपरः,
चकास्त्योमानन्दो निगमविधिसम्बोधनपरः।।१३।।

व्याख्या- इह=नरेलादिग्रामीणक्षेत्रेषु, कृषककनकः= श्रीकनक सिंहो नामकः कृषकः, आर्याणाम्=श्रेष्ठानां जनानाम्, 'ऋहलोर्ण्यत्' ३.१.१२४, इति सूत्रेण अर्हे अर्थेण्यत् प्रत्यये कृते आर् इति वृद्धौ कृतायां सम्पन्न आर्यः शब्दः इति। ऋ गतौ गतिश्चात्र ज्ञानार्थकः अतः ज्ञानिनः आर्याः गतेस्त्रयोऽर्था ज्ञानं गमनं प्राप्तिश्च। समाजम्='संवीयते अस्यां इति समाजः तं समाजम्' 'अजिव्यघञ्पोः' (२.४.५६) इति वी भावस्य अभावः। 'अजेव्रज्योश्च' (७.३.६०) इत्यनेन कुत्व निषेध वृद्धिश्च (सम्+अज्+घञ्) समाजः शब्द निष्पन्नः तं समाजं सभाम्, यथा हि 'विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्' (भर्तृहरि.२.७) अस्थापयत्= स्थापितवान् पुनश्च=तत्पश्चाच्च अनघकृत्=पुण्यकृत् न अघः अनघः नञ् समाजः ततः कृ धातो क्विपि कृते रुपम् अनधकृत् इति निष्पन्नम्, कनकतनयः=श्रीमतः कनकसिंहस्य पुत्रः स्थायित्वम्=स्थैर्यमदात्=अयच्छत्। निगमविधि- सम्बोधनपरः=वैदिकविधिना सम्यक्तया ज्ञानबोधनपरः युवकशिविरायोजनपरः=युवकानां शिविराणामायोजने तत्परः, नरेलाख्ये ग्रामे=नरेलानामके ग्रामे=उपनगरे चकास्ति देदीप्यमानोऽस्ति।

आर्यभाषा- यहाँ ग्रामीण क्षेत्र में कृषक कनकसिंह आर्य ने श्रेष्ठ आर्य पुरुषों का समाज स्थापित किया और तत्पश्चात् पुण्याचरण करने वाले आचार्य भगवान्देव आर्य कनकसिंह के पुत्र ने आर्यसमाज को स्थायित्व प्रदान किया। वैदिकविधि से युवकों के ज्ञानबोधन में तत्पर तथा नरेला क्षेत्र के युवकों के शिविर आयोजित करने में तत्पर नरेला नामक उपनगर में श्री ओमानन्द ओजस्विता के साथ देदीप्यमान हैं।।१३।।

आभासः कुकृत्यानां निवारणाय प्रयतमानानामाचार्याणां वर्णनं कुर्वन्नाचष्टे-

समाजे ये व्याप्ता निगमविपरीता नरकगाः,
कुकृत्याः सांगाश्च प्रतिदिवससंवर्द्धनपराः।
प्रणाशायैतेषां विमलमति येते द्रुततरम्,
निजार्षान् सिद्धान्तान् प्रथयितुमलं भाति सुखदः।।१४।

व्याख्या- प्रतिदिवससम्बर्द्धनपराः=प्रतिदिनं सम्प्रवर्द्धने प्रवृत्ताः ये 'दिवसं दिवसं प्रति=प्रतिदिवसम्' अव्ययीभावः समासः। सांगाः=स्वांगाः सांग इत्याख्यं अश्लीलं ग्राम्य दृश्यनाटकं हरयाणा प्रान्ते कुख्यातमस्ति। निगमविपरीताः=वैदिकमतविरुद्धाः नरकगाः= अधोपतनगामिनः नरकं न्यरकं नीचैर्गमनं नास्मिन् रमणं स्थानमल्पमप्यस्तीति वा (निरुक्त १-३) नरकं प्रति गच्छति ये पूर्वोक्ता कुकृत्याः=दूषितानिकर्माणि समाजे=जनसमुदाये व्याप्ताः=प्रसृताः सन्ति। एतेषां दुष्कर्मणां प्रणाशाय=विनाशाय समापनाय निजार्षान्=स्वीयान् ऋषिणा प्रोक्तान् सिद्धान्तान्=राद्धान्तान् प्रथयितुमलम्= प्रकृष्टरुपेण कथने समर्थः, सुखदः=सौख्यप्रदः विमलमतिः= पवित्रबुद्धिः येते=प्रयतितवान् द्रुततरं शीघ्रं तथा भूतः स यति=विराजते सुशोभते।

आर्यभाषा- समाज में जो वेदविरुद्ध नरकगामी बुरे कृत्य सांग आदि दिन प्रतिदिन बढने की ओर अग्रसर हो रहे थे, उनके विनाश के लिए पवित्र बुद्धि वाले श्री ओमानन्द ने अति शीघ्रता से प्रयास प्रारम्भ किया। अपने आर्ष

सिद्धान्तों को फैलाने में समर्थ, सत्कार्यो से सुख देने वाले स्वामी जी सुशोभित होते हैं।।१४।।

आभासः अन्यच्च कीदृश स गुरुवर्य इति पुनस्तमेव आचष्टे -

दयानन्दस्यर्षेर्विदितशिवमार्गे युतमना,
अधीत्यानेकानि स्मृतिकथितशास्त्राणि कृतधीः।
सुसाहित्यस्रष्टा प्रखरमतितेजा दिनकरः,
चकास्त्योमानन्दः शुचिमुनिवरो वेदपथगः।।१५।।

व्याख्या- दयानन्दस्यर्षेः=ऋषेर्दयानन्दस्य विदितशिव-मार्ग=ज्ञाते शिवस्य शम्भो पथि युतं मनो यस्य स युतमनाः=दत्तावधानः कृतधी=स्थितप्रज्ञो, मुनिः अनेकानि=असंख्यानि, एकाधिकानि स्मृतिकथित-शास्त्राणि=धर्मशास्त्रोक्तानि शास्त्राणि अधीत्य=पठित्वा सुसाहित्यस्रष्टा=सम्यग्वाङ्मयस्य निर्माणकर्त्ता सुसाहित्यस्य स्रष्टा, सुसाहित्यं च=सुष्ठु साहित्यं कथ्यते साहित्यं च हितेन सहितं साहित्यम्, सहितस्य भाव साहित्यम् (सहित+ष्यञ् आदिवृद्धिः टिलोपे च कृते साहित्यम्) प्रखरमतितेजा= प्रकष्टया मत्या तेजो यस्य स प्रकृष्टमतितेजा, प्रखरमतितेजा, प्रकृष्टाष्टाबुद्ध्या तेजस्वी, दिनकरः=भास्वान् सूर्यः शुचि मुनिवरः=पवित्रो मुनिश्रेष्ठो वेदपथगः=वैदिकमार्गे गन्ता ओमानन्दः= इत्याख्यो गुरवरः चकास्ति=प्रकाशते।

आर्यभाषा- ऋषि दयानन्द द्वारा खोजा गया, विदित प्रसिद्ध शिव का मार्ग है उस पर जिसने मन लगा लिया है ऐसे कृत बुद्धि ने धर्मशास्त्रोक्त शास्त्रों को पढ़कर अच्छे साहित्य का स्रजन किया प्रखर बुद्धि से और तेजस्वी दिनकर की भाँति प्रकाशमान पवित्र मुनिश्रेष्ठ=वैदिकपथ के पथिक ओमानन्द गुरुवर प्रकाशमान हैं।।१५।।

आभासः तस्यैव गुरुवर्यस्यायुर्वेदवैशारद्यं वर्णयन् जगाद-

भवेयुर्नीरोगा विमलनिजदेशे हितभुजः,
इहायुर्वेदीया अतिशुभचिकित्सा सुभिषजाम्।
सदा विस्तीर्णा स्यात् प्रयतनपरो वैद्ययतिराट्,
चकास्त्योमानन्द परिहृतगदः कोविदवरः।।१६।।

व्याख्या- विमलनिजदेशे=पवित्रे स्वदेशे भारतवर्षे, हितभुजः=हितं भुङ्क्ते इति हितभुक् ते हितभुजः, हितकारकं भोजनं खादन्तो जनाः नीरोगाः=रोगरहिताः भवेयुः, स्युः, जायेरन् भवन्तु सन्तु वा इह=अत्र भारते, सुभिषजाम्=श्रेष्ठानां वैद्यानामतिशुभचिकित्सा=अत्यन्त शोभना रोगनिवारणपद्धति विस्तीर्णा स्यात्=प्रसृता स्यात् प्रचलिता भवेत् आयुर्वेदीया=आयुर्वेदे भवा, सः पूर्वोक्तः गुरुः वैद्ययतिराट्=चिकित्सकसंन्यासिवर्यः विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन् (सत्) सुधीः कोविदो बुधः। धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान् पण्डितः कविः। धीमान् सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः।।२.७.५ दूरदर्शी, दीर्घदर्शी......(विदुषः के २२नामानि अमरकोषे-२-७-५,६) कोविदवरः=विद्वदग्रगण्यः परिहृतगदः रोगनिवारकः, गदः स्त्री रुग्रुजाचोपतापरोग-व्याधिगदामयाः (इत्यमरः-२.६.५१) असाध्यं कुरुते कोषं प्राप्ते काले गदः पदमादधौ (रघु.-९.४) सदा=सर्वस्मिन् काले ('शश्वदभीक्ष्णं नित्यं सदा सततमजस्रमिति सातत्ये' इति अव्ययप्रकरणे आपिशलिराचार्यः) प्रयतनपरः=कृतप्रयत्नः ओमानन्दः=इत्याख्यः वैद्यराट्=भिषग्वरः चकास्ति=प्रकाशते ।

आर्यभाषा- अपने पवित्र भारतवर्ष में हित करने वाला भोजन करने वाले, नीरोग लोग हों, यहाँ पर अच्छे वैद्यों की बहुत अच्छी चिकित्सापद्धति सदा फैले, रोगों को हरने वाला, विद्वानों में श्रेष्ठ, प्रयत्नशील, वैद्यराज संन्यासी श्रेष्ठ ओमानन्द प्रकाशमान होता है।।१६।।

आभासः अधुना आचार्यवर्यस्य योगविद्यावैशारद्यं वर्णयन्नाह-

जनान्नुद्धर्तुं यो निजसुखबलेर्दानमकरोत्,
विरक्तो बुद्धः स स्वजनगृहभूत्यागमकरोत्।
सुवैराग्यापन्नः शमदमयुतो योगविबुधः,
चकास्त्योमानन्दो यमनियमपालो यतिवरः।।१७।।

व्याख्या- यः=यथोक्तोगुरुवरः, जनान्=मानवान्, उद्धर्तुम्=उद्धारं कर्तुम्, निजसुखबलेः दानम्=स्वकीयानां सुखभूतद्रव्याणामाहूत्या। प्रदानमकरोत्=विहितवान् कृतवान् सः=तथा भूतः स गुरुवरः विरक्तः=वैराग्यमापन्नः बुद्धः=जागृतः, प्रबुद्धः, गौतमबुद्ध इव वा स्वजनगृहम्=स्वकीयजनधनसम्पत्तेः भवनस्य भूम्यादीनाम् परित्यागं धर्मार्थप्रदानम्, अकरोत्=अकारि, कृतवान् सुवैराग्यापन्नः=सुष्ठु ज्ञानस्य पराकाष्ठां प्राप्त सः शमदमयुतः=शान्त्या मनसोदमनेन च युक्तो योगबिबुधः= योगविद्यायाः विद्वान् 'योगः समाधिः इति' व्यासभाष्ये यमनियमपालः=यमनियमयोः पालकः तत्र **'अंहिसासत्यस्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः'** **'शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमः'** इति योगदर्शने पतंजलिः। यतिवरः=संन्यस्तवर्यः ओमानन्दः=इत्याख्यो गुरुवरः चकास्ति=प्रकाशते, विराजते इति।

आर्यभाषा- जो मानवमात्र का उद्धार करने के लिए अपने सुखसम्पन्न जीवन वैभव का बलिदान कर देता है, सुन्दर वैराग्य से सम्पन्न शान्ति एवं मनोदमनयुक्त प्रबुद्ध एवं जागरुक या महात्मा गौतम बुद्ध की भाँति, योगविद्याविशारद यमनियमों का पालनहारा, श्रेष्ठ संन्यासी श्री ओमानन्द सरस्वती प्रकाशमान देदीप्यमान है।।१७।।

आभासः सत्सु अपि संन्यासीषु न त्वादृशाः सन्ति इति-

दिगन्ते श्रूयन्ते जगति बहवः पुण्यचरिताः,
सुंसन्यासिश्रेष्ठा जनहितरता योगविबुधाः।
अपारे संसारे न तव सदृशाः गोचरगताः,
चकास्त्योमानन्दः सकलविदुषां सम्मततरः।।१८।।

व्याख्याः दिगन्ते=क्षितिजे दूर पर्यन्तं जगति=संसारे बहवः=अनेके पुण्यचरिताः=धर्माचरणे लग्नाः, सुसंन्यासिश्रेष्ठाः=सज्जनाः संन्यासिनः श्रेष्ठाः जनहितरताः=लोककल्याणरताः योगविबुधाः= योगविद्याविदः श्रूयन्ते=कर्णगोचरमायान्ति, (परन्तु इति शेषः) अपारे संसारे=सुविस्तृते विश्वस्मिन्नपि विश्वे तव सदृशाः=भवादृशाः न=नहि गोचरगताः=श्रुतिपथं दृष्टिपथं च नायाताः, सकलविदुषां=विश्वेषां विद्वद्वर्याणां सम्मततरः=मान्यतरः ओमानन्दः=इत्याख्यः संन्यासी चकास्ति=विराजते सुशोभते इति।।१८।।

आर्यभाषाः समग्रविश्व में क्षितिज के दूरपर्यन्त अनेक पावनचरित श्रेष्ठ संन्यासी लोकमंगल में लगे हुए योगविद्याविशारद सुने जाते हैं परन्तु विशाल विस्तृत विश्व में आप जैसे विद्वानों में मान्यतर सर्वसम्मत देखने या सुनने में नहीं आये अर्थात् आप ही सर्वश्रेष्ठ हैं। इस प्रकार का स्वामी ओमानन्द विराजमान सुशोभित होता है।।१८।।

आभासः आभासः गुरुगुणगौरवमेवाचष्टे-

अहो! ब्राह्मं तेजो विलसति सदा यस्य वदने,
अविद्याया नाशं निगमबलजन्येन महता।
करोत्याद्यन्तं यः श्रुतिभवशरैस्तर्कनिवहैः,
जयत्योमानन्दो रिपुदलनकारी सुचतुरः।।१९।।

व्याख्या- यस्य=काव्यनायकस्यौमानन्दस्य वदने= मुखमण्डले, 'वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम्' इति कोषे। सदा=सर्वस्मिन् काले अहो! आश्चर्यसूचकम् अव्ययम्, ब्राह्मणः इदं ब्राह्म तेजसो विशेषणम् ब्रह्मन्, शरीरे बृहत्वात् वीर्य ब्रह्मन् इति मन्यते तस्य च गुरोः ब्रह्मचर्यपालनेन कान्तिमयं शरीरं मुखमण्डलं चाभवत्। 'तस्येदम्' (४.३.१२०) सूत्रेण अण् प्रत्यये आदि वृद्धौ 'नस्तद्धिते' (६.४.१४४) इति टिलोपे ब्राह्मम् इति शब्दो निष्पद्यते। तदेव तेजः=तेजस्त्वं विलसति=देदीप्यते इत्यभिप्रायः, यः=गुरुवर्य निगमबलजन्येन= वैदिकविद्याबलोत्पन्नेन महता=गुरुतेण ज्ञानबलेन अविद्यायाः=अज्ञानस्य आद्यन्तम्=आदितोऽन्तपर्यन्तं नाशम्=ध्वसंनम् करोति=विदधाति श्रुतिभवशरैः= वेदज्ञानोत्पन्नैः तीक्ष्णबाणैः, तर्कनिवहैः तर्करूपिणा पवनेन च, 'सप्तसु पवनेषु एकः पवनो निवह कथ्यते' इति कोषः सुचतुरः=अतीव निपुणः रिपुदलनकारी=शत्रूणां मर्दनकारी

ओमानन्दः=एतान्नामाको विद्वद्वरः जयति= विजयते।।१९।।
आर्यभाषा- जिसके मुखमण्डल पर सदा ही ब्रह्मचर्य का तेज सुशोभित अर्थात् देदीप्यमान रहता है वैदिकविद्या के ज्ञान जन्य महान् बल से अज्ञानान्धकार का आदि से अन्त तक वैदिक ज्ञान के बाणों से तथा तर्क रुपी तीव्रपवन से जो नाश करता है वह अत्यन्त चतुर संन्यासी ओमानन्द शत्रु समूह का दलन करने वाला सदा ही जय को प्राप्त होता है।।१९।।

आभासः पुनः गुरुदेवस्यगुणगरिमाख्यानं क्रियते-

सुविद्यामार्तण्डो गुरुकुलपदव्याऽपि शुशुभे,
अविद्याध्वान्तानां प्रलयकरणायेह दिनकृत्।
स ऐतिह्यवेत्ता निजयतनमुद्रार्जितनिधिः,
चकास्त्योमानन्दः श्रुतिगदितमार्गे धृतमनाः।।२०।।

व्याख्या- सुविद्यामार्तण्डः=सद्विद्यायाः सूर्य ओमानन्दः गुरुकुलपदव्याः अपि=गुरुकुलपदव्या अपि=गुरुकुल-कांगडीविश्वविद्यालयस्य विद्यामार्तण्डः इति पी.एच.डी. मानद उपाधिना अपि शुशुभे=सुशोभितोऽभूत्, इह=अत्र संसारे अविद्याध्वान्तानाम्=अज्ञानान्धकाराणां प्रलयकरणाय=विनाशं कर्तुम्, दिनकृत=सूर्यः (आसीत्) इति शेषः सः=ओमानन्दाख्यो यतिः, ऐतिह्यवेत्ता=इतिहासज्ञः ऐतिह्यस्य वेत्ता ऐतिह्यवेत्ता (षष्ठी तत्पुरुषः) ऐतिह्य शब्दो व्याकरणस्य अनेन 'अनन्तावसथेतिह भेषजाञ् ञ्यः' ५.४.२३ सूत्रेण स्वार्थेञ्य प्रत्यये कृते आदिवृद्धौ च कृतायां सिद्ध्यति। वेत्ता च विदेस्तृचि कृते। निजयतनमुद्रार्जित-निधिः=स्वकीयेन प्रयत्नेन पुराकालीनानां मुद्राणां संगृहीतोनिधिर्येन स (पुरातत्वसंग्रहालयरुपे गुरुकुले झज्जरे द्रष्टुं शक्यते) श्रुतिगदितमार्गे=वेदोक्तपथि धृतमनाः=दत्तचित्तः ओमानन्दः=एतन्नामकः गुरुवरः चकास्ति=विराजते।

आर्यभाषाः सद् विद्या का सूर्य गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की मानद उपाधि विद्यामार्तण्ड (पी.एच.डी.) से भी सुशोभित हुए, इस लोक के अविद्यान्धकार के नाश के लिए वे सूर्यवत् हैं, वे महान् इतिहासज्ञ हैं और उन्होंने अपने प्रयत्न से गुरुकुल झज्जर में पुरातत्व संग्रहालय के रुप में प्राचीन सिक्के संगृहीत किये हैं। वेदोक्त मार्ग पर दत्तचित्त वह ओमानन्द गुरुवर शोभायमान है।।२०।।

-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

शेष अग्रिम अंक में...

दयानन्द उवाच-

अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त जो कर्मकाण्ड है, उसमें चार प्रकार के द्रव्यों का होम करना होता है- एक सुगन्धगुणयुक्त, जो कस्तूरी केशरादि है, दूसरा मिष्टगुणयुक्त, जो कि गुड़ और शहद आदि कहते हैं, तीसरा पुष्टिकारकगुणयुक्त, जो घृत, दुग्ध और अन्न आदि हैं, और चौथा रोगनाशकगुणयुक्त जो कि सोमलतादि ओषधि आदि है। इन चारों का परस्पर शोधन, संस्कार और यथायोग्य मिला के अग्नि में युक्तिपूर्वक जो होम किया जाता है, वह वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करने वाला होता है। इससे सब जगत् को सुख होता है। और जिसको भोजन छादन, विमानादि यान, कलाकुशलता, यन्त्र और सामाजिक नियम होने के लिए करते हैं, वह अधिकांश से कर्ता को ही सुख देने वाला होता है।

जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत-वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त रहता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहे।

समाचार दर्पण

वेदार्ष न्यास के छात्र करेंगे भोपाल में हरयाणा का प्रतिनिधित्व

मानव संसाधन विकास मन्त्रालय (भारत सरकार) द्वारा संचालित राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (नवदेहली) द्वारा आयोजित हरयाणा प्रान्तीय संस्कृत शास्त्रीय स्पर्धा का आयोजन आदर्श महाविद्यालय अम्बाला में दिनांक ..... को आयोजित किया गया। इस प्रतिस्पर्धा में वेदार्ष न्यास की शाखा क्र. २ गुरुकुल मंझावली, फरीदाबाद के चार छात्रों ने अष्टाध्यायी एवं योगमीमांसा भाषण में भाग लिया। जिसमें ब्र. ओमप्रकाश आर्य ने योगमीमांसा भाषण में प्रथम स्थान प्राप्त किया। ब्र. निखिल आर्य ने अष्टाध्यायी कण्ठपाठ में द्वितीय एवं ब्र. गौरव आर्य ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतिस्पर्धा में हरयाणा प्रान्त के लगभग ७५ प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रथम स्थान पर चयनित छात्र अब भोपाल में राष्ट्रिय स्तर पर अयोजित प्रतिस्पर्धा में प्रतिनिधित्व करेंगे। विजयी छात्रों के गुरुकुल में पधारने पर गुरुकुल के आचार्य जयकुमार जी एवं संस्था के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने छात्रों को आशिर्वाद एवं शुभाकामनाएँ प्रदान की।

आचार्य जयकुमार

गुरुकुल मंझावली, फरीदाबाद (हरयाणा)

शोक सन्देश

महर्षि दयानन्द गुरुकुल योगाश्रम, नरसिंहनाथ, पाईकमाल जिला बरगढ़, उड़ीसा के संस्थापक स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती जी का शरीर गत २८.१०.२०१३ को प्रात: काल पंचतत्व में विलीन हो गया। जिनका अन्तिम संस्कार २९.१०.२०१३ को पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार आचार्य बुद्धदेव, आचार्य अनन्त आर्य, आचार्या शारदा, आचार्य स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, आमसेना, आचार्य बृहस्पति नुआपाली, आचार्य सुदर्शनदेव हरिपुर, उड़ीसा प्रान्त के अनेक आर्यजनों एवं अनेक आर्य संन्यासियों की उपस्थिति में किया गया। जिनकी शान्ति सभा ९.११.२०१३ प्रात:काल ९ बजे गुरुकुल योगाश्रम नरसिंहनाथ में आयोजित की गई। स्वामी ज्ञानानन्द सरस्वती जी पश्चिमी ओडिशा में गुरुकुल परम्परा के संवाहक एवं सक्रिय सामाजिक राजनैतिक व्यक्तित्व के धनी थे। स्वामी जी पिछले आठ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे। स्वामी जी के निधन से गुरुकुल परिवार ही नहीं सभी क्षेत्रीय नागरिक शोक सन्तप्त हैं।

जितेन्द्र पुरुषार्थी,

गुरुकुल नरसिंहनाथ ओडिशा

संस्कार

मानव–जीवन की उन्नति में संस्कारों का विशिष्ट महत्व है। मानव की शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक उन्नति के लिए जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त भिन्न–भिन्न समय पर संस्कारों की व्यवस्था प्राचीन ऋषि–मुनियों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से की है। संस्कारों से ही मानव द्विज बनने का अधिकार मिलता है।

–स्वामी दयानन्द सरस्वती

संस्कृत-शिक्षणम्

ब्र. सत्यकामार्य

अयि सुधियः पाठकाः! संस्कृतस्य शिक्षणं न कठिनम्। संस्कृतं तु अतीव सरलं मधुरं च वर्त्तते। आगच्छत वयं प्रयोगं कृत्वा पश्यामः। एतस्मिन् विभागे प्रत्यङ्कं व्यावहारिकज्ञानाय सरलानि कानिचन वाक्यानि सरला नियमाश्च प्रदीयन्ते। अत्र विचार्य पठित्वा भवन्तोऽपि संस्कृतेन व्यवहारं कर्तुमर्हन्ति।

बालक का पढ़ना अध्यापक को अच्छा लगता है।	बालकस्य पठनं अध्यापकाय रोचते।
भोजन में कितनी देर है।	भोजने कियान् विलम्बः।
दूध का पीना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।	दुग्धस्य पानं स्वास्थ्याय लाभदायकं भवति।
भोजन के उपकरण लाओ।	भोजनस्य उपकरणानि आनय।
सभा में बैठना अच्छा है।	सदसि सदनं साधुरस्ति।
आपका संस्कृत बोलना सबको अच्छा लगता है।	भवतः संस्कृतभाषणं सर्वेभ्यः रोचते।
वेद का पढ़ना-पढ़ाना आर्यो का परम धर्म है।	वेदस्य पठनं पाठनम् आर्याणां परमधर्मः अस्ति।
वन में रोने से क्या लाभ है?	वने रोदनेन किम्?
ईश्वर की स्तुति करने से मोक्ष मिलता है।	ईश्वरस्य स्तवनेन मोक्षः मिलति।
मेरा सिनेमा देखना आचार्य को अच्छा नहीं लगता।	मम चलचित्रदर्शनम् आचार्याय न रोचते।

नियमः -

१. **'ल्युट् च'** नपुंसकलिङ्गे भावे धातोर्ल्युट् प्रत्ययो भवति। भावे ल्युट्प्रत्यान्ता शब्दाः नपुंसकलिङ्गे एव भवन्ति। नपुंसकलिङ्गे च ज्ञानवत्। भाव इति धातोः अर्थः भवति ल्युट्प्रत्ययान्तशब्दैर्योगे षष्ठीविभक्तिर्भवति । यथा : बालकस्य शयनं पश्य।

धातुरूपम्	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
यती प्रयत्ने (प्रयत्न करना)	यतते	यतेते	यतन्ते
आत्मनेपदम्	यतसे	यतेथे	यतध्वे
लट् लकारः	यते	यतावहे	यतामहे

शब्दकोशः -

व्योम् (नपुं.)	आकाश।	दिक् (स्त्री.)	दिशा।
अम्बरम्	आकाश।	काष्ठा	दिशा।
अभ्रंम्	आकाश।	आशा	दिशा।
नभः (नपुं.)	आकाश।	ककुप्	दिशा।
गगनम्	आकाश।	मेघः	बादल।
खम्	आकाश।	वारिवाहः	बादल।